

Sadhayati Samskara Bharati Bharate Navajivanam

——
साधयति संस्कारभारति भारते नवजिवनम्

——
Document Information



Text title : Sadhayati Samskara Bharati Bharate Navajivanam

File name : sAdhayatisaMskArabhAratibhAratenavajIvanam.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Dr. K Ghanashyam Prasad Rao

Latest update : January 29, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org



साधयति संस्कारभारति भारते नवजुवनम्



साधयति संस्कारभारति भारते नवजुवनम् ॥ ध्रु ॥

प्रणवमूलं प्रगतिशीलं प्रभरराष्ट्रविवर्धकम् ।

शिवं-सत्यं-सुन्दरमभिनवं संस्कारशोधमम् ॥ १ ॥

मधुर-मञ्जुल-रागभारित-हृदय-तन्त्री-मन्त्रितम् । (रागभारितं)

वाद्ययति सङ्गीतकं वसुधैकभावनपोषकम् ॥ २ ॥

ललितरसमय-लास्यलीला चण्डताण्डवगमकडेला ।

कलित-जुवन-नाट्यवेदं कान्ति-कान्ति-कथा-प्रभोदम् ॥ ३ ॥

यत्पुष्टिकलान्वितं परमेष्ठिना परिवर्तितम् ।

विश्वरङ्गमण्डपं शाश्वतं श्रुतिसम्मतम् ॥ ४ ॥

जुवयत्वभिलेखमभिलं समवर्षासमीकृतम् ।

प्लावयति रससिन्धुना प्रतिष्ठितमानसनन्दनम् ॥ ५ ॥

- ओं के धनश्याम प्रसाद राव

अनुवाद-

ॐकार जिसके मूल में है, जो उत्पत्तिशील है, त्वरित गति से राष्ट्र का निर्माण करने वाली है, सत्य, मंगलमय सुन्दर एवं संस्कारों को प्रदान करने वाली संस्कार भारती नामक संस्था भारत में नवजुवन प्रदान कर रही है ।


जो पृथ्वी की (समतल मानव जाति की) अकेला को पुष्ट करने वाली है तथा माधुर्यपूर्णा, सुन्दर हृदय के तारों से मिलकर राग-भर संगीत बजती है ।

सुन्दर, रसयुक्त, लास्य (मधुर नृत्य) तथा उग्र ताण्डव नृत्य को उत्पन्न करने वाला माधुर्य एवं ओज गुणसहित आनन्द भरी कथाओं से


युक्त नाट्य वेद जुवन को सुन्दर बनाता है ।

थौसठ कलाओं से समन्वित, ऋषि द्वारा परिवर्तित अथवा नवीनकृत
संसार रुपी यक्ष पर भ्रमणशील शाश्वत एवं वेदों द्वारा समर्पित
है ।

समाहित सभी अभिलेखों में से सात वर्गों में समाहित होकर प्रत्येक
छिन्दु मानस के मन की आनन्द रस रुपी समुद्र के द्वारा आनन्द में निमज्जित
करता है ।

——
Sadhayati Samskara Bharati Bharate Navajivanam

pdf was typeset on September 16, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

